पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
कुमार संदीप

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - कुमार संदीप

स्मार्टफोन की दुनिया में रिश्तों का घटता अपनापन

: एक गंभीर चिंता

स्मार्टफोन की दुनिया में रिश्तों का घटता अपनापन : एक गंभीर चिंता

आज स्मार्टफोन हमारी जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। संचार, शिक्षा, जानकारी और अनेक आवश्यक कार्यों के लिए इसका उपयोग उपयोगी है। लेकिन चिंता तब उत्पन्न होती है, जब सुविधा का यह साधन धीरे-धीरे हमारे जीवन का स्वामी बनने लगे और हम अपने आसपास मौजूद उन रिश्तों, भावनाओं और आत्मीय क्षणों से दूर होते जाएँ, जिनसे जीवन में वास्तविक सुख और अपनापन आता है।

मैं ग्रामीण परिवेश में रहता हूँ और अपने आसपास के लोगों की गतिविधियों को बहुत करीब से देखता हूँ। कभी गाँव में रिश्तों के बीच एक अलग ही गर्माहट हुआ करती थी। पड़ोस के चाचा का अपने भतीजे के प्रति स्नेह और भतीजे का चाचा के प्रति सम्मान सहज रूप से दिखाई देता था। भाई-भाई साथ बैठकर एक ही थाली में भोजन करते, खाते-खाते एक-दूसरे से बतियाते और दिनभर की छोटी-बड़ी बातें साझा करते थे। पड़ोस केवल घरों का समूह नहीं था, बल्कि एक-दूसरे के सुख-दुःख में सहभागी बनने वाला परिवार हुआ करता था।

लेकिन आज परिस्थितियाँ बदलती दिखाई दे रही हैं। एक ही घर में बैठे लोग एक-दूसरे के पास तो हैं, पर एक-दूसरे के साथ नहीं हैं। भोजन की थाली सामने है, परिवार के सदस्य आसपास बैठे हैं, मगर बातचीत की जगह हाथों में स्मार्टफोन है। आँखें अपनों की ओर कम और मोबाइल की स्क्रीन की ओर अधिक रहती हैं। जो समय कभी परिवार के साथ हँसने-बोलने और अपनेपन को महसूस करने में बीतता था, उसका बड़ा हिस्सा अब आभासी दुनिया में गुजर रहा है।

यह बदलाव केवल घर तक सीमित नहीं है। किसी विवाह समारोह, पूजा-पाठ या अन्य शुभ अवसर पर लोग पहले दूर-दूर से मिलकर आते थे। एक-दूसरे का हालचाल पूछते, गले मिलते, पुराने संबंधों को याद करते और घंटों बैठकर बातचीत करते थे। किसी के घर का सुख पूरे समाज का सुख बन जाता था। आज वही शुभ अवसर कई बार तस्वीरें और वीडियो बनाने तथा उन्हें सोशल मीडिया पर साझा करने तक सीमित होते दिखाई देते हैं।

लोग अवसर को जीने से अधिक उसे कैमरे में कैद करने में व्यस्त दिखाई देते हैं। जिस क्षण को हृदय में संजोना चाहिए, वह कई बार मोबाइल की स्क्रीन पर ही सिमटकर रह जाता है।

सबसे अधिक चिंता मुझे बच्चों और युवा पीढ़ी को देखकर होती है। एक समय था जब गाँव में शाम ढलते ही मिट्टी के तेल से जलने वाली डिबिया या लालटेन की रोशनी में बच्चे हाथ-पाँव धोकर पढ़ने बैठ जाते थे। संसाधन सीमित थे, लेकिन पढ़ने की लगन, अनुशासन और परिवार के साथ रहने की संस्कृति मजबूत थी। आज संसाधन बढ़े हैं, रोशनी बेहतर हुई है, शिक्षा के साधन बढ़े हैं, लेकिन उसी के साथ बच्चों का एक बड़ा हिस्सा शाम के समय स्मार्टफोन की दुनिया में खोता हुआ दिखाई देता है।

यह स्थिति केवल पढ़ाई के समय की समस्या नहीं है। धीरे-धीरे यह हमारे संस्कारों को भी प्रभावित कर रही है। बड़ों के प्रति सम्मान, छोटों के प्रति स्नेह, माता-पिता के प्रति परवाह और परिवार के साथ बैठकर बातचीत करने की आदत-इन सब पर इसका प्रभाव पड़ रहा है। कभी बच्चे दादा-दादी और बुजुर्गों के पास बैठकर उनकी बातें सुना करते थे। आज कई बच्चे उसी समय मोबाइल की स्क्रीन पर व्यस्त दिखाई देते हैं। एक ही छत के नीचे रहते हुए भी पीढ़ियों के बीच संवाद का पुल कमजोर होता जा रहा है।

स्मार्टफोन ने हमें दुनिया से जोड़ दिया, लेकिन कहीं न कहीं हमारे अपने लोगों से दूर भी कर दिया है। हम हजारों किलोमीटर दूर बैठे व्यक्ति से तुरंत बातचीत कर लेते हैं, लेकिन कभी-कभी बगल में बैठे अपने माता-पिता से दो मिनट बात करने का समय नहीं निकाल पाते। सोशल मीडिया पर सैकड़ों मित्र दिखाई देते हैं, लेकिन वास्तविक जीवन में मन की बात सुनने वाला अपना व्यक्ति कम होता जा रहा है।

हमें यह समझना होगा कि तकनीक बुरी नहीं है, लेकिन उसका असंतुलित उपयोग निश्चित रूप से चिंता का विषय है। स्मार्टफोन हमारे लिए साधन रहे, जीवन का केंद्र न बने। हमें यह तय करना होगा कि तकनीक हमारे जीवन को सुविधाजनक बनाएगी या हमारा जीवन ही तकनीक के इर्द-गिर्द घूमने लगेगा।

परिवार में कुछ समय ऐसा भी होना चाहिए जब सभी मोबाइल अलग रखकर एक-दूसरे के साथ बैठें। भोजन के समय बातचीत हो, बच्चों से उनके दिन के बारे में पूछा जाए, बुजुर्गों के अनुभव सुने जाएँ और घर के सदस्यों के बीच मन की बातें साझा हों। शुभ अवसरों पर तस्वीरें अवश्य लें, लेकिन उस अवसर को जीना भी न भूलें। बच्चों को स्मार्टफोन देने के साथ-साथ उन्हें समय का मूल्य, परिवार का महत्व और संस्कारों की सुंदरता भी समझानी होगी।

भौतिक सुख-सुविधाओं के साधनों का उपयोग वर्तमान समय की आवश्यकता है। स्मार्टफोन भी आज जीवन का आवश्यक उपकरण बन चुका है। लेकिन सुविधा के पीछे भागते-भागते यदि हम अपने जीवन के अनमोल क्षण, रिश्तों का अपनापन, परिवार की आत्मीयता और समाज की संवेदनशीलता ही खो दें, तो यह विकास नहीं, बल्कि एक ऐसी कीमत होगी जिसे चुकाकर हम भीतर से बहुत कुछ खो देंगे।

हमें फिर से उस जीवन की ओर लौटने की आवश्यकता है जहाँ घर में मोबाइल से अधिक संवाद की आवाज सुनाई दे, भोजन की थाली में स्क्रीन नहीं बल्कि अपनों का चेहरा दिखाई दे, शुभ अवसरों पर कैमरे से अधिक रिश्तों की गर्माहट महसूस हो और शाम के समय बच्चों के हाथों में केवल स्मार्टफोन नहीं, बल्कि किताबें भी दिखाई दें।

क्योंकि तकनीक हमें दुनिया से जोड़ सकती है, लेकिन रिश्तों को जीवित रखने का काम केवल मनुष्य का अपनापन ही कर सकता है।

- कुमार संदीप

लेखक परिचय

नाम – कुमार संदीप
ग्राम - सिमरा, पोस्ट - श्रीकांत, प्रखंड - बंदरा, जिला - मुजफ्फरपुर, बिहार

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**कुमार संदीप**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...